

ગર્મી કે મૌસુમ કો દેખતે હુએ સમી ચાપાનલોં કો યુદ્ધસ્તર પર દુલ્હસ્ત કરને કા નિર્દેશ, પાની કી નહીં હોની ચાહેણ કિલ્લાત: ઉપાયુક્ત કુમુદ સહાય

રાષ્ટ્ર સંવાદ સંવાદદાતા

જામતાડા: ઉપાયુક્ત સહ જિલા દંડાધિકારી જામતાડા શ્રીમતી કુમુદ સહાય (ભાંપ્રોસે) કી અધ્યક્ષતા મેં વિભિન્ન વિકાસ યોજનાઓ સે સંબંધિત તકારીકી વિભાગ કી સમીક્ષા હેતુ બૈઠક આઢૂત કી ગઈ।



ਬૈઠક મેં જામતાડા જિલા અંતર્ગત જાપાનિત વિભિન્ન યોજનાઓ સે સંબંધિત તકારીકી વિભાગો વથું ગ્રામીણ વિકાસ વિશેપ પ્રમંડલ, સિંચાઈ પ્રમંડલ જામતાડા એવ કુંડહિત, લઘુ સિંચાઈ, ભવન, પથ, વિદ્યુત, પેયજલ એવ સ્વચ્છા, ગ્રામીણ કાર્ય એવ એનાર્થીયા આદિ દ્વારા સંચાલિત યોજનાઓ કી અધ્યક્ષતા પ્રગતિ કી વિભાગવાર સમીક્ષા કિયા ગયા!

ਬૈઠક મેં સમીક્ષા કે દૌરાન ઉપાયુક્ત ને સમીક્ષા કરતે હુએ ઉન્હોને સમીક્ષા વિભાગો વિભાગો કી આયોજન કરતે હોએ ઉન્હોને સમીક્ષા વિભાગો કો લખ્યે કે વિશેપ

અર્થેક્ષત પ્રગતિ હેતુ કાર્ય કરને કા નિર્દેશ દિયા। ઉન્હોને સંબંધિત વિભાગ કે અધિકારી કો નિર્દેશ દિયે હુએ એ કહા કી વિશેપ વર્ષ કરતે હુએ અગાને આદેશ તક કે લિએ વેતન બંદ કરને કા નિર્દેશ કરતે હોએ કી ઓં હૈ એસે મેં કોઈ કાર્ય એવ વિશેપ પ્રમંડલ સંચાલિત યોજનાઓ સે સંબંધિત તકારીકી વિભાગો વથું ગ્રામીણ વિકાસ વિશેપ પ્રમંડલ, સિંચાઈ પ્રમંડલ જામતાડા એવ કુંડહિત, લઘુ સિંચાઈ, ભવન, પથ, વિદ્યુત, પેયજલ એવ સ્વચ્છા, ગ્રામીણ કાર્ય એવ એનાર્થીયા આદિ દ્વારા સંચાલિત યોજનાઓ કી અધ્યક્ષતા પ્રગતિ કી વિભાગવાર સમીક્ષા કિયા ગયા!

બૈઠક મેં સમીક્ષા કે દૌરાન ઉપાયુક્ત ને સમીક્ષા કરતે હોએ ઉન્હોને સમીક્ષા વિભાગો કો લખ્યે કે વિશેપ

વિભાગો વિભાગો કી આયોજન કરતે હોએ ઉન્હોને સમીક્ષા વિભાગો કો લખ્યે કે વિશેપ

એવ એનાર્થીયા આદિ દ્વારા

विना प्रीतम के फागुन का क्वामोल

लक्ष्मी सिंह 'रूबी'



विना प्रीतम के फागुन का क्वामोल, प्रेम से प्रस्फुटित किरनों का क्वामोल, अंग अंग में उमंग है, ली अंगड़ाई प्रीत ने, जगाई नई रीत पिया, चिड़ियों की कलरव के साथ, मिलकर गयें बसंती गीत पिया, मैं बनकर सुमन मचलती रही, तेरी बाहों में गिर गिर कर संभलती रही, जब दिल की धड़कनों ने मचाया शार, बन कर बाबी दौड़ी चली आई तेरी ओर, कोयल की कूक दिल में हुक उठाती, बैरन विरह में जलती तुझे पास बुलाती, पल पल पिया तेरी याद सताती, अब तो आजा हरजाई, मेरी प्रीत तुझे पास बुलाती

किनारा

रीना सिन्हा सलोनी



मधुआरे ने कहा-
लो किनारा आ गया,
तेरी से चूपू चलाई
और कश्ती लगा दी किनारेहू
समंदर का अंत हुआ,
अब है जीमी की शुरुआत,
उतर आया कश्ती से किनारे पर,
दो कदम चलकर
उसने मुड़ कर समंदर की ओर
देखा,

शोर करती लहरें,
हर तरफ पानी ही पानी,
अरे ये क्या?
यहाँ तो जीमी खत्म हो गई
और है समंदर की शुरुआत
ऐसा कैसे हुआ ?
दृश्य कैसे बदल गए ?
समंदर से किनारे को देखने में
और जीमी से किनारे को देखने में
किनारा फक्त था,
चीजें वही थीं,
दृष्टि वही,
बस मधुआरे की जगह बदल गई,
नजरिया बदल गया,
शाद इसीलिए
दृश्य भी बदल गएहू
दूर कहीं मिल रहे थे
समंदर और आकाश,
चूप खड़ी थी जीमी,
मधुआरा मुकुराकर चल दियाहू

स्पन्तांरण

शिप्रा सैनी मौर्या



हाँ, वह सिमट कर हो गई बहुत नुकोली, पतियों ने ले लिया काँटों का रूप। यह आवश्यक थी था, जीने के लिए परिस्थिति ही ऐसी थी कि, जहाँ वह पनपी वहाँ बहुत कपी थी, प्यार स्वरूप पानी की। रहा सहा यार भी तेज धूप में, वाघ बनकर हवा में न मरल जाए इसलिए वह पैनी हो गई। भले वह खटकती हो सबको लेकिन थोड़े से प्यार को बचाकर, जिंदा तो है।

उठो जागो हे भारत के वीर मनोष कुमार पाठक



उठो जागो हे भारत के वीर माँ भारती तुम्हें पुकार रही, यंत्रों से थकी शिथिल पड़ी वे धरती, ये धरती तुम्हें पुकार रही।

तुम भारत की आन बनो,

तुम भारत की शान बनो,

हो कहीं षड्यंत्र दुम्हनों की,

तुम उसे नाकाम करो।

सीना छलनी कर दो तुम उन

द्रियों का,

खुशी ताह है इस मिंटी का,

और हुकार भेरे फिलसीनियों का,

बदल दो भारत की परंपराओं को

अब...

की गाल नहीं वह गांधी का,

अब एक थाप पर सौ बजेगा,

यह गाल है अब नए भारत का।

उठो जागो हे भारत के वीर

माँ भारती तुम्हें पुकार रही...

तप से हो या ताप से

हर स्वप्न सकार करो तुम।

विजान में नई खोज करो तुम।

शिक्षा, संस्कृति की अलख

जगाओ,

हर गांव है इस मिंटी का,

और हुकार भेरे फिलसीनियों का,

बदल दो भारत की परंपराओं को

अब...

की गाल नहीं वह गांधी का,

अब एक थाप पर सौ बजेगा,

यह गाल है अब नए भारत का।

उठो जागो हे भारत के वीर

माँ भारती तुम्हें पुकार रही...

जायरी है वाचता मन मंदिर

शशि प्रकाश सिन्हा 'सेवी'

नादान दिल ने उन्हें फिर भी , इसी दिल में संभाल रखा है। सिसक पड़ते थे कभी जो मेरी इक आह पर,

अब पलटते भी नहीं चीख और

करहा पर।

नया बलाव हर दिन नया

परिवर्तन है।

खुशी गम का मिश्रण, यही तो

जीवन है।

कभी कोई दिल की गहराई में

उतरता है।

कभी कोई दिल से उतर जाता है।

फूलों की यारी भी हवाओं के संग,

थपको पर झूमने वाला,

हल्की चोट से बिखर जाता है।

है फेरब जी की दुनिया,

न किसी पर ऐतबार है।

हर स्वप्न पर मिले धोखा,

माँ भारती तुम्हें पुकार रही...

तप से हो या ताप से

हर स्वप्न सकार करो तुम।

विजान में नई खोज करो तुम।

शिक्षा, संस्कृति की अलख

जगाओ,

हर गांव है इस मिंटी का,

और हुकार भेरे फिलसीनियों का,

बदल दो भारत की परंपराओं को

अब...

की गाल नहीं वह गांधी का,

अब एक थाप पर सौ बजेगा,

यह गाल है अब नए भारत का।

उठो जागो हे भारत के वीर

माँ भारती तुम्हें पुकार रही...

जायरी है वाचता मन मंदिर

शशि प्रकाश सिन्हा 'सेवी'

लगा फिर से जोर, एक कोशिश और, बस, एक कोशिश और।

वास्तव जमशेदपुरी



माँ, दया है, करुणा है, ममता की मरत है।

माँ इस सुधि में सबसे खुबसूरत है

बीज की सारी संभालानाएँ

उभी होती हैं साकार

जब उसे मिलता है

मिट्टी का यारे

नवजात पहलता है

माँ को उसकी गंध से

जब तक रहता है माँ के आगेश में

भूत रहता है सरे द्वंद्व को

माँ के आंगन में लगते,

माँ जूहा आभास प्रिय।

मैंने दर्पण भी था देखा, हर कोना

रचा उसे था,

जब तक रहता है चिल्लता है

और उसका सुखाया है

आस्थिर क्या है यही एसा

जातू की जायी जैसा

माँ के हाथों में इंश्वरी

सुखाका का अवसास है

जब तक रहता है यही एसा

जब तक रहता है यही एसा